BHARATI INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & DEVELOPMENT (BIJMRD)

(Open Access Peer-Reviewed International Journal)

DOI Link : https://doi.org/10.70798/Bijmrd/04070009

Available Online: www.bijmrd.com | BIJMRD Volume: 4 | Issue: 07 | July 2026 | e-ISSN: 2584-1890

उच्च विद्यालयों के छात्रों के लिए एक विषय के रूप में हिंदी शिक्षा में बहु-बुद्धि सिद्धांतकीभूमिका और शैक्षणिक सफलता पर इसका प्रभाव

प्रतिभा कुमारी[1] & डॉ शमा चक्रवर्ती[2]

1. नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी, जमशेदपुर, Email: pratibhasingh04041980@gmail.com
2. सह प्राध्यापक, नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी, जमशेदपुर

सारांश: *बहु-बुद्धि सिद्धांत (Multiple Intelligences Theory), जिसे हॉवर्ड गार्डनर ने प्रतिपादित किया, यह मानता है कि बुद्धि केवल एक सामान्य मानसिक क्षमता नहीं है, बल्कि व्यक्तियों में विभिन्न प्रकार की क्षमताओं का समूह है। उच्च विद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षा में इस सिद्धांत का प्रयोग विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए प्रभावी शिक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी भाषा एवं साहित्य के शिक्षण में भाषिक, तार्किक-गणितीय, दृश्य-स्थानिक, संगीतमय, शारीरिक-गतिशील, अंतर्वैयक्तिक, अंतःवैयक्तिक तथा प्रकृतिवादी बुद्धियों का समावेश किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, कविता शिक्षण में संगीत और लय, कहानी शिक्षण में नाट्य एवं अभिनय, व्याकरण में तार्किक गतिविधियाँ तथा साहित्यिक विषयों में समूह चर्चा और आत्म-चिंतन का उपयोग विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ा सकता है।*

यह अध्ययन हिंदी विषय के शिक्षण-अधिगम में बहु-बुद्धि सिद्धांत की भूमिका तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है। बहु-बुद्धि आधारित शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करती है और उन्हें अपनी प्रमुख क्षमताओं के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करती है। इससे विषय के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, रचनात्मकता, भाषा कौशल, आलोचनात्मक चिंतन और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास संभव होता है। साथ ही, सक्रिय एवं अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों की हिंदी विषय में उपलब्धि में सकारात्मक सुधार देखा जा सकता है। अतः उच्च विद्यालयों में हिंदी शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने के लिए बहु-बुद्धि सिद्धांत आधारित शिक्षण रणनीतियों को अपनाना उपयोगी हो सकता है।

कुंजी शब्द: *बहु-बुद्धि सिद्धांत, हिंदी शिक्षा, उच्च विद्यालय, शैक्षणिक सफलता, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, भाषिक बुद्धि, अधिगम उपलब्धि।*

1.0 प्रस्तावना: प्रत्येक व्यक्ति में अव्दितीय बुद्धिमत्ताहोतीहैजोउनकीसंज्ञानात्मकक्षमताओंकोप्रभावितकरतीहै, जैसेतर्क, समस्या समाधानऔर भाषासमझ।बुद्धि –लब्धिके पारम्परिक उपायअक्सरएकलमानकपरध्यानकेन्द्रितकरतेंहैं, लेकिनहार्वर्डगार्डनरकेबहुबुद्धि-लब्धिसिद्धांत १९८३ ने भाषाई, तार्किक-गणितीय और स्थानिक सहित कई प्रकार की बुद्धि-लब्धि की पहचान करके इस दृष्टिकोण को चुनौती दी।

शिक्षकतेजी से छात्र-केन्द्रित शिक्षण दृष्टिकोण अपना रहें हैं जो इन विविध बुद्धिमताओं को अपनाता है।विभेदित शिक्षाशास्त्र, जो छात्रों की पसंदीदा सीखने की शैलियों के साथ शिक्षण विधियों को संरेखित करता है, बच्चों का पढाई के साथ जुड़ाव और

अकादमी के प्रदर्शन को बढ़ा सकता है। जबकि इस सिद्धांत कीकठोर परीक्षण की कमी और कुछ बुद्धिमता को प्राथमिकता देने की प्रवृति के लिए आलोचना की गई है, यह सक्रिय शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए मूल्यवान ढांचा बना हुआ है।

यह अध्ययन हाई स्कूल के छात्रों के बीच प्रमुख बुद्धिमता और हिंदी में शैक्षणिक उपलब्धि के साथ उनके सहसंबंध का पता लगाने के लिए विस्तृत अध्ययन है , जिसमे विभिन्न स्कूलों के कक्षा दसवीं और बारहवीं के बच्चों कि जाँच की जाती है, यह शोध एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है कि कैसे एकाधिक बुधिमत्ता को लागू करने से भाषा सीखने में शैक्षणिक परिणामों में सुधार होता है। ताकि बच्चे अपने भविष्य में हिंदी विषय को लेकर भी आगे बढ़े।

हिंदीविषय: हिंदीसंवैधानिक रूप से भारतकी राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारत के लिए स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। भारत में प्रतिवर्ष १४ सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हमारी हिंदी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद किया जा रहा है।

आज विश्व के कोने –कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे है।एक हिन्दुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानि हिंदी तो आनी ही चाहिए , साथ ही हमें हिंदी का सम्मान भी करना सीखना होगा और इसे भी अपने भविष्य का आधार बनाने के लिए उत्सुक रहना होगा।

बहुविध बुद्धि सिद्धांत : मल्टीप्ल इंटेलिजेंस यानी बहु-प्रतिभा सिद्धांत मनोवैज्ञानिक हार्वर्ड गार्डनर का एक सिद्धांत है जो बताता है कि हर व्यक्ति में अलग-अलग तरह की प्रतिभाएँ होती है और लोग अलग-अलग तरीकों से सीखते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार हर व्यक्ति में सात तरह की प्रतिभाएँ होती है। इनमे से दो या ज्यादा किसी व्यक्ति में प्रमुख हो सकती है। कुछ लोगों में सातों प्रतिभाएँ संतुलित रूप से होती हैं। इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि को एक सामान्य क्षमता के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे कई तरह की पहचान योग्य बुद्धिमताओं में बांटा जाना चाहिए। ये हैं भाषाई, स्थानिक, दैहिक, इन्द्रियगत, अंतर व्येक्तिक , सांगीतिक, तार्किक गणितीय।

इस सिद्धांत का इस्तेमाल शिक्षण में किया जा सकता है , इससे शिक्षकों को यह पता चलता है कि छात्रों को विषय-वस्तु को अलग-अलग तरीकों से समझाने की जरूरत होती है।इससे छात्रों को सिखने में मदद मिलती है और शिक्षकों को भी विषय पर अपनी महारत बढ़ाने में मदद मिलती है। जिससेशैक्षणिक सफलता भी प्रभावित होती है।

1.1 सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

1. एकाधिक सीखने की शैलियाँ – जेना(२०१८)व्यक्तियों के बीच सीखने की शैलियों की विविधता पर जोर दिया जाता है, इन अंतरों को पूरा करने वाले शिक्षण दृष्टिकोण की वकालत की जाती है।

2. व्यापक शिक्षणलक्ष्य – फेल्डर एंड ब्रेंट (२००५)तर्क है किप्रभावी शिक्षा को छात्रों को सभी सीखने की शैलियों से सम्बन्धित कौशल से लैस करना चाहिए , प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए समाधान तैयार करने के बजाय बहुमुखी प्रतिभा को बढ़ावा देना चाहिए।

3. सीखने की शैलियों का वर्गीकरण – सेनेर और कोच्कलिस्कन (२०१८)सात प्रमुख सीखने की शैलियों, दृश्य, श्रवण, मूर्त , शाब्दिक, तार्किक , समूह और व्यक्तिगत की पहचान की गई है जो छात्रों द्वाराजानकारी को संसाधित करने के तरीके को आकार देते हैं।

4. जागरूकता का प्रभाव – फेल्डर और ब्रेंट (२००५)अनुसंधान इंगित करता है कि छात्रों की सीखने की क्षमता में सुधार होता है क्योंकि वे अपनी व्यक्तिगत सीखने की शैलियों के बारे में जागरूक हो जाते हैं, खासकर जब शिक्षण विधियाँ इस शैली के साथ संरेखित होती हैं।

5. शिक्षक का प्रभाव – हेइक्किन्नेन एट अल. (१९८५)इस बात पर प्रकाश डालें कि शिक्षकों के पास अक्सर सुचना प्रसंस्करण के पसंदीदा तरीके होते हैं जो उनकी शिक्षण तकनीकों को प्रभावित कर सकते हैं।

6. बहु-विध बुद्धि-लब्धि का ढांचा –स्टैनफोर्ड(२००३)ये कहते है कि कैसे कई बहु-विध बुद्धि कक्षाएं विभिन्न शिक्षण रणनीतियों , एकीकृत पाठ्यक्रम और सक्रिय सीखने को बढ़ावा देने वाले प्रमाणिक मूल्यांकन को प्रोत्साहित करती हैं।

7. भाषा कौशल के साथ सहसंबंध –कोउरा और हेबैशी (२०१४)बहु-विध प्रतिभा और विशिष्ट भाषा कौशल में उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया, जिससे पता चलता है कि विविध शिक्षण विधियाँ भाषा सीखने को बढ़ा सकती हैं।

8. बुद्धि मेंअंतरसंबंध –रायसी और जैनाली (२०१६)मौखिक भाषाई और दृश्य –स्थानिक बुद्धिमत्ता और समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच मध्यम अंतर-संबंधों की खोज की गई , जो विभिन्न बुद्धिमता के अंतर्संबंध को उजागर करता है।

9. शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ सकारात्मक सम्बन्ध –अनुसंधान इंगित करता है कि तार्किक- गणितीय, दृश्य , विशेष, मौखिक, भाषाई और पारस्परिक बुद्धिमत्ता का शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध है।

१०. बुद्धि की पूर्वानुमानित समझ–अध्ययनों से पता चलता है कि दृश्य –स्थानिक, मौखिक-भाषाई और पारस्परिक जैसी बुद्धिमत्ताएं सांखिकीय रूप से शैक्षणिक प्रदर्शन की भविष्यवाणी कर सकती हैं जबकि संगीतमय बुद्धिमत्ता उपलब्धि की नकारात्मक भविष्यवाणी कर सकती है।

1.2 अध्ययन का औचित्य: कई बहु-विध बुद्धि-लब्धि और विभिन्न विषयों पर उनके प्रभाव पर व्यापक शोध के बावजूद, महत्वपूर्णकमियाँ बनी हुई हैं।

1. हिंदीभाषा सीखने पर ध्यान देना –अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में हिंदी में रूचि और प्रदर्शन बढ़ाने के लिए बहु-विध बुद्धि-लब्धि के अनुप्रयोग कोलक्षितकरने वाले अध्ययनों की कमीहै।

2. हिंदी विषय में रूचि पैदा करने की रणनीतियाँ बनाना –कुछ अध्ययन विशेष रूप से अंग्रेजी माध्यम के संदर्भ में हिंदी में उच्च अध्ययन करने में छात्रों की व्यस्तता और रूचि को बेहतर बनाने के तरीकों पर चर्चा करते हैं।

3. गतिविधियों काएकीकरण –मौजूदा शोध ने हिंदी भाषा शिक्षा के अनुरूप विशिष्ट गतिविधि आधारित सीखने की रणनीतियों की प्रभावशीलता का पूरी तरह से पता नहीं लगाया है, हालाँकि सबूत बताते हैं कि सक्रिय सीखने से जुड़ाव बढ़ता है।

4. अनुदैधर्य प्रभाव –हिंदी के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण और उनके शैक्षणिक प्रक्षेप पथ पर बहु-बुद्धि आधारित शिक्षण रणनीतियों के स्थायी प्रभावों की जाँच करने वाला सीमित अनुदैधर्यशोध है।

5. शिक्षक प्रशिक्षण–साहित्य हिंदी शिक्षण में कई बुद्धि-लब्धि रणनीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता है।

शोध अन्तराल : इस अध्ययन का औचित्ययह जाँच इन कमियों को महसूस करना है कि हिंदी में रूचि बढ़ाने, शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करने और छात्रों को उच्च अध्ययन के लिए हिंदी को एक व्यवहार्य विषय के रूप में विचार करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए बहु-विध बुद्धि-लब्धि का लाभ कैसे उठाया जा सकता है।

1.3 समस्या का विधान: वर्तमान अध्ययन की समस्या इस प्रकार शुरू की जा सकती है उच्च विद्यालयों के छात्रों के लिए एक विषय के रूप में हिंदी में शिक्षा में बहु-बुद्धि की भूमिका और शैक्षणिक सफलता पर इसका प्रभाव।

1.4 प्रस्तावित शोध कार्य के उद्धेश्य

1. शिक्षा में पारम्परिक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य बहु-विध बुद्धि-लब्धि सिद्धांत की भूमिका का आकलन करना।

2. अंग्रेजी विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय के अध्ययन में रूचि उत्पन्नकरने हेतु आकलन करना।

3. अन्यविषयके परिप्रेक्ष्य मेंहिंदी विषय में संस्थानके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के तरीके खोजने का उद्देश्य।

4. उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अन्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय के प्रति रुझान उत्पन्न करने का उद्देश्य।

5. शैक्षणिक सफलता की प्राप्ति हेतु आकलन करना।

1.5 अनुसंधान प्रश्न

1. क्याशिक्षा में पारम्परिक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य बहु-विध बुद्धि-लब्धि सिद्धांत की भूमिका मेंकोई अंतर है?

2. क्याअंग्रेजी विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय के अध्ययन में रूचि उत्पन्नकरनेमें कोई अंतर है?

3. क्या अन्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय में संस्थानके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के तरीके में कोई अंतर है?

4. क्याउच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अन्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय के प्रति रुझान उत्पन्न करने में कोई अंतर है?

5. क्याशैक्षणिकसफलता की प्राप्ति सम्भवहै?

1.6 प्रस्तावित शोध की परिकल्पना

1. शिक्षा में पारम्परिक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य बहु-विध बुधि-लब्धि सिद्धांत की भूमिका में महत्वपूर्ण अंतर है।

2. अंग्रेजी विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय के अध्ययन में रूचि उत्पन्न करने में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।

3. अन्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय में संस्थान के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के तरीके में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।

4. उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अन्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय के प्रति रुझान उत्पन्न करने में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

5. शैक्षणिक सफलता की प्राप्ति बहुत हद तक संभव है।

1.7 प्रमुख शब्दों की परिचालन परिभाषा

1. उच्च विद्यालय-उच्च विद्यालय या माध्यमिक विद्यालय, माध्यमिक शिक्षा देने वालासंस्थान होता है। यह प्राथमिक विद्यालयों के बाद आता है और व्यावसायिक या तृतीयक शिक्षा के लिए बच्चों को तैयार करता है। कक्षा एक से बारहवीं तक की पढ़ाई कराने वाले स्कूल को उच्च माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है। उच्च विद्यालय शिक्षा का वह स्तर है जो विश्वविद्यालयों , व्यावसायिक विश्वविद्यालयों , कम्युनिटी महाविद्यालयों , लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रोधौगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीयक स्तर है जो प्रायः एच्छिक होता है।

2. छात्र–छात्रवहव्यक्तिहोताहैजोकिसीभीतरहकीशिक्षाप्राप्तकररहाहो। छात्रकोविद्यार्थीभीकहाजाताहै। विद्यार्थीदोशब्दोंसेमिलकरबनाहैविद्याऔरअर्थी, इसकाअर्थहैविद्याप्राप्तकरनेवाला। छात्रकिसीभीउम्रकाहोसकताहैजैसेकिबालक, किशोरयुवायावयस्क।येकिसीभीस्तरकीशिक्षाप्राप्तकरसकताहैप्राथमिक, माध्यमिक, उच्चयाव्यावसायिकशिक्षा।

3. हिंदी विषय-हिंदी, भारत की राजभाषा है। यह दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली लगभग एक हजार साल पुरानी भाषा है। हिंदी, संस्कृत से विकसित हुई है।

4. शिक्षा–शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना। शिक्षा शब्द विद्या का पर्याय है।शिक्षा का मतलब है ज्ञान , सदाचार, उचित आचरण , तकनीकी शिक्षा , तकनीकी दक्षता , विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया है जो बालक की जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास करना, सामान्य ज्ञान प्रदान करना, तर्क और निर्णय लेने की शक्तियों को विकसित किया जाता है।

5. बहु-बुद्धि सिद्धांत-बहु-बुद्धि सिद्धांत, अमेरिकी मनोवैज्ञानिक हार्वर्ड गार्डनर द्वारा प्रस्तावित एक सिद्धांत है। इस सिद्धांत के मुताबिक, बुद्धि एक सामान्य कर्क के प्रभुत्व में नहीं होती, बल्कि कई तरह की होती है। गार्डनर के मुताबिक , हर व्यक्ति में बुद्धि

के आठ प्रकार होते हैं। संगीतमय-ताल, दृश्य-स्थानिक, मौखिक-भाषाई, तार्किक-गणितीय, शारीरिक-गतिक, अन्तर व्यक्तिक , अन्तः व्यक्तिक , प्राकृतिक।

गार्डनर ने अपने सिद्धांत को सबसे पहले १९८३ में अपनी किताब फ्रेम्स औफ माइंड में बताया था कि बुद्धि को किसी एक क्षेत्र से नहीं जोड़ा जा सकता , क्योकि हर व्यक्ति की अपनी क्षमताएँ होती हैं।किसी व्यक्ति में दो या ज्यादा प्रमुख प्रतिभाएँ हो सकती हैं। कुछ लोगों में सातों प्रतिभाएँ संतुलित रूप से होती है।

6. शैक्षणिक सफलता –शैक्षणिक सफलता एक व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणा है जिसे छात्र उपलब्धि के बराबर माना जाता है और अक्सर मानकीकृत परिक्षण स्कोर पर छात्रों के प्रदर्शन से जोड़ा जाता है।

1.8 अध्ययन का दायरा : इस अध्ययन का दायरा मुख्य रूप से उच्च विद्यालय के कक्षा बारहवी के बच्चों के लिए ही रखा गया है। उच्चमाध्यमिक विद्यालय के बच्चें ही अपने आगे की कक्षाओं के लिए अपनी इच्छा से विषयों का चयन करते हैं। अतः इस अध्ययन का कार्य क्षेत्र मुख्य रूप से बारहवी के बच्चों के लिए है। जो अपने आने वाले भविष्य में हिंदी विषय को लेकर आगे बढना चाहते हैं। साथ ही इस विषय को ज्यादा रोचक बनाने के लिए हमने बहु-बुद्धि सिद्धांत का प्रयोग कर इस अध्ययन के कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। बहु-बुद्धि सिद्धांत जो हार्वर्ड गार्डनर १९८३ के द्वारा दिया गया है जिसमे बताया गया है कि हर बच्चों में किसी भी चीज को समझने के लिए अपनी अलग क्षमता होती है कम से कम दो तरह की बुद्धि-लब्धि क्षमता या सातों क्षमताएँ सभी बच्चो में विद्यमान होती है। इस अध्ययन में हमने मुख्य रूप से गार्डनर के इसी सिद्धांत का प्रयोग करते हुए इसे करने का प्रयास किया है।

अध्ययनकेप्रमुखचर

1. **स्वतंत्रचर (Independent Variables):**

o बहु-बुद्धि सिद्धांत

2. **निर्भरचर (Dependent Variable):**

o शैक्षिकउपलब्धि

3. **नियंत्रणचर (Control Variables):**

o अंग्रेजीमाध्यम के उच्च विद्यालयोंमें

शोधविधि

o शोध पद्धति : इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मकअनुसंधानपद्धति(Descriptive Research Method)अपनाई जाएगी।

o *जनसंख्या: :* *इस अध्ययनकी जनसंख्या सरायकेला जिले के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के बारहवी कक्षा से लिया जाएगा।*

o प्रतिदर्श (SAMPLE): इस अध्ययन के लिए प्रतिदर्श सरायकेला जिले के –गम्हरिया, पश्चमी सिंहभूम क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के बारहवी कक्षा के बच्चों से लिया जाएगा।

o प्रतिदर्श का आकार और नमूना : इस अध्ययन के लिए बारहवी कक्षा के १६ से १८ वर्ष के लगभग ४०० बच्चों को लिया जाएगा जो की यादृच्छिक नमूना होगा।

1.9 कार्य प्रणाली

1. पढ़ाईकी संरचना:-प्रस्तुतअध्ययन में उच्च विद्यालयों के छात्रों के लिए एक विषय के रूप में हिंदी में शिक्षा में बहु-बुद्धि सिद्धांतकीभूमिका और शैक्षणिक सफलता पर इसका प्रभाव का आकलन करने हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण पद्धतिका प्रयोग किया गया है।

2. जनसंख्या और नमूना:-वर्तमान अध्ययन का नमूना सरायकेलाजिले के विभिन्नक्षेत्रों में स्थित सिर्फअंग्रेजी माध्यम स्कूलों सेकेवल बारहवी कक्षा के बच्चों कायादृच्छिक नमुनाकरणलिया गया है। जिसमें१६ से १८ वर्ष के लगभग ४००बच्चोंको ही लिया गया है। अन्य विषय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विषय को ही रखा गया है। इस अध्ययन में बहु-बुद्धि लब्धि सिद्धांत को जांचने हेतु शिक्षण प्रक्रिया में अलग-अलग रणनीतियों के साथ अलग-अलग शिक्षण विधियों का प्रयोग किया गया है।

3. उपयोग किए जाने वाले उपकरण और सामग्री:-इस अध्ययन मेंप्राथमिक डेटा प्रति स्कूल बारहवी कक्षा के २००बच्चों के समूह पर अलग-अलग रणनीतियों और शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हुएहिंदी विषय का शिक्षण करवाने के पश्चात बच्चो से प्रश्नावली जो प्रत्येक प्रश्न १ अंक के होंगे और कुल पाँच प्रश्न दिए जाएँगे जो उसी पाठ से सम्बन्धित होंगे जो अलग-अलग विधियों का प्रयोग करते हुए बच्चों को पढ़ाया गया है। सभी विद्यालयों के प्रश्नावली के आधार पर परम्परागत शिक्षण विधियों और आधुनिक शिक्षण विधियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए प्रतिशत का प्रयोग किया जाएगा जो हमे बतायेगा कि कौन सी विधि के प्रयोग से ज्यादा से ज्यादा बच्चे पाठ को समझने में सक्षम होंगे। इसी आधार पर बच्चों का हिंदी विषय में रूचि का भी आकलन किया जायेगा। जिसे ग्राफ के माध्यम से भी दर्शाया जाएगा। बच्चों द्वारा प्राप्त प्रश्नावली के अंकों के आधार पर प्रतिशत को क्रमानुसार टेबल सारणी में भी दिखाया जाएगा। विधियों का चयन बहु-बुद्धि लब्धि सिद्धांत के आधार किया जाएगा।

4. डेटा का संग्रह:-इस अध्ययन के लिए चयनित नमूने से डेटा एकत्र करने के लिए शोधकर्ता व्यक्तिगत रूप से सरायकेला जिले के चयनित अंग्रेजी माध्यम के उच्च विद्यालयों का दौरा करेंगी।साथ ही अलग-अलग विधियों और रणनीतियों का प्रयोग हिंदी विषय के शिक्षण में करते हुए बच्चों से हिंदी विषय से सम्बन्धित प्रश्नावली करवाने से आए प्राप्तांक के आधार पर किया जाएगा।

5. डेटा विश्लेषण का तकनीक:-डेटा का विश्लेषण उपयुक्त सांखिकीय तकनीकसेमैन्युअल रूपसे औरमानक प्रोटोकॉल का उपयोग करके किया जाएगा।

1. वर्णात्मक सांखिकीय विधि:-माध्य, मानक विचलन और प्रतिशत विश्लेषण।

2. अनुमानित सांखिकीय विधि:-टीपरीक्षण।

1.10 अध्ययन के अपेक्षित परिणाम

१६-१८ आयु वर्ग के ४००छात्रों पर अध्ययन से विभिन्न शिक्षण शैलियों को संबोधित करते हुए शिक्षण रणनीतियों की प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि का पता चलेगा अलग-अलग निर्देशात्मक दृष्टिकोणों की तुलना में प्रयोग एक पारम्परिक व्याख्यान विधि और एक बहुआयामी दृष्टिकोण जो विभिन्न शिक्षण शैलियों को शामिल करता है डॉ. हार्वर्ड गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धांत के अनुरूप।

शुरुआती निष्कर्षों में शिक्षक द्वाराकेवल व्याख्यान पद्धति को नियोजित किया जाएगा, जिसके परिणामों से छात्रों के बीच समझ के कम प्रतिशत का संकेत मिलेगा। यह दृष्टिकोण मुख्य रूप से भाषाई-मौखिक और श्रवण शिक्षार्थियोंको संलग्न करता है , जो सम्भावित रूप से दृश्य-स्थानिक या गतिज शिक्षार्थियों जैसे विभिन्न सीखने की प्राथमिकताओं वाले लोगों को अलग कर देगा। इस परिदृश्य में सीमित जुड़ाव और समझ कई महत्वपूर्ण कारकों पर प्रकाश डालती है।

1. संज्ञानात्मक विविधता–छात्रों के पास संज्ञानात्मक शैलियों और प्राथमिकताओं की एक श्रृंखला होती है। सभी के लिए एक ही तरह का दृष्टिकोण व्यक्तिगत शक्तियों को नजरअंदाज कर सकता है , जिससे विघटन और प्रदर्शन में कमी आ सकती है।

2. प्रेरणा और रूचि–पूरी तरह से व्याख्यानों पर निर्भर रहना उन छात्रों की रूचि को आकर्षित करने में विफल हो सकता है जो गतिविधियों या दृश्य प्रस्तुतियों पर हाथ मिलाकर बातचीत करते है जिससे सीखने के लिए उनकी प्रेरणा कम हो जाती है।

3. सुचना का अवधारणा –विभिन्न तौर-तरीकों के माध्यम से सामग्री के साथ जुड़ने से स्मृति प्रतिधार्ण में वृद्धि होती है। अकेले व्याख्यान पद्धति गहरी समझ की सुविधा नहीं दे सकती है , खासकर उन छात्रों के लिए जो सीखने के अनुभवों से लाभान्वित होते है।

4. उन्नत परिणाम:-बहु-बुद्धि दृष्टिकोण

बाद के अनुदेशात्मक चरण में जब एक ही पाठ को बुद्धिमता को संबोधित करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करके पढ़ाया जाएगा तो छात्रों की समझ में उल्लेखनीय सुधार होगा, शिक्षण रणनीतियों में इस बदलाव के परिणामस्वरूप की सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

5. समावेशी सीखनेका माहौल –दृश्य शिक्षार्थियों के लिए दृश्य एड्स जैसे विभिन्न सीखने की शैलियों को पूरा करके पारस्परिक शिक्षार्थियों के लिए समूह चर्चा और गतिज शिक्षार्थियों के लिए व्यवहारिक गतिविधियाँ शिक्षक ने एक अधिक समावेशी वातावरण बनेगाजो प्रत्येक छात्र के सीखने के अनूठे तरीके का सम्मान करेगा।

6. सक्रिय भागीदारी:-विविध शिक्षण विधियों कोशामिल करने वाली सक्रिय भागीदारी ने संभवतः अधिक छात्र भागीदारी और जुड़ाव को बढ़ावा देगा। जो छात्र केवल व्याख्यानप्रारूपमें हाशिए पर महसूस कर सकते थे , वे अब इस तरह से सामग्री से जुड़ सकते हैं जो उनके साथ व्यक्तिगत रूप से तर्कसंगत होंगे।

7. समग्र समझ:-सीखने के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण केलिए एकाधिक बुद्धिमता को संबोधित करने से छात्रों को विषय वस्तु की समग्र समझ और धारणा को बढ़ाने के लिए विभिन्न लेंसों के माध्यम से सामग्री से जोड़ा जा सकता है।

डेटा विश्लेष्ण से हाई स्कूल के छात्रोंकी शैक्षणिक उपलब्धि पर बहु-बुद्धि सिद्धांत के महत्वपूर्ण प्रभाव का पता चलेगा। यह छात्रों की सफलता को बढ़ाने के लिए विविध शिक्षण शैलियों को शामिल करने के लिए शैक्षिक ढांचे की जरूरतों पर प्रकाश डालेगा।

1.11 अध्ययन का परिसीमन

1. इस अध्ययन में केवल उच्च विद्यालयों के बारहवी कक्षा के बच्चों को ही शामिल किया गया है।
2. इस अध्ययन में केवल हिंदी विषय से सम्बंधित बातें की गई हैं।
3. इस अध्यन में केवल सरायकेला जिले के अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को ही ध्यान में रखा गया है।
4. इस अध्ययन में मुख्य रूप से बहु-बुद्धि सिद्धांत का प्रयोग करते हुए हिंदी विषय को रोचक बनाने की बात रखी गई है।

सन्दर्भ:-

- गार्डनर, एच. (1983). फ्रेम्स ऑफ माइंड: द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस। बेसिक बुक्स।
- आर्मस्ट्रांग, टी. (2009)। क्लासरूम में मल्टीपल इंटेलिजेंस (तीसरा संस्करण)। एएससीडी।
- कोर्नहैबर, एम. एल. , फिएरोस, ई. जी. , और वीनेमा, एस. ए. (2004)। मल्टीपल इंटेलिजेंस: रिसर्च और प्रैक्टिस से बेहतरीन आइडिया। एलिन और बेकन।
- टॉमलिंसन, सी. ए. (2001)। मिक्स्ड-एबिलिटी क्लासरूम में निर्देश को कैसे अलग करें। एएससीडी।
- वाटरहाउस, एल. (2006)। मल्टीपल इंटेलिजेंस, मोजार्ट प्रभाव और भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक महत्वपूर्ण समीक्षा। एजुकेशनल साइकोलॉजिस्ट, 41(4), 207-225।
- बैरिंगटन, ई. (2004)। उच्च शिक्षा में छात्रों को विविधता सिखाना: मल्टीपल इंटेलिजेंस सिद्धांत कैसे मदद कर सकता है। उच्च शिक्षा में शिक्षण, 9(4), 421-434. https://doi. org/10. 1080/1356251042000252363
- ब्रॉडी, एस. (2017). कोई व्यक्ति बहु-बुद्धि का निर्धारण कैसे कर सकता है? जर्नल प्लस एजुकेशन, 18(2), 204-212. https://doi. org/10. 24250/jpe/2/2017/SB
- कैलिक, बी. , और बिरगिली, बी. (2013). प्रतिभाशाली शिक्षा के लिए बहु-बुद्धि सिद्धांत: आलोचना और निहितार्थ. युवा वैज्ञानिक और प्रतिभाशालीता की शिक्षा के लिए जर्नल, 1(2), 1-12. https://doi. org/10. 17478/JEYSG. 201329002

- कैंपबेल, एल. , कैंपबेल, बी. , और डिकिंसन, डी. (1996). बहुविध बुद्धिमत्ता के माध्यम से शिक्षण और सीखना। बोस्टन, एमए: एलिन और बेकन।
- कॉटरेल, एस. (2003)। अध्ययन कौशल पुस्तिका। न्यूयॉर्क: पालग्रेव मैकमिलन।
- डेनिग, एस. जे. (2004)। बहुविध बुद्धिमत्ता और सीखने की शैलियाँ: दो पूरक आयाम। टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड। नियाग्रा विश्वविद्यालय।
- दिलीहंट, एम. एल. (2004)। बहुविध बुद्धिमत्ता और प्रत्यक्ष निर्देश का तीसरी और पाँचवीं कक्षा के छात्र की उपलब्धि, कार्य संलग्नता, छात्र प्रेरणा और शिक्षक प्रभावकारिता पर प्रभाव (डॉक्टरेट शोध प्रबंध)। हॉवर्ड विश्वविद्यालय। एएटी 3114619।
- यूरेशिया जर्नल ऑफ मैथमेटिक्स, साइंस एंड टेक्नोलॉजी एजुकेशन। (2019)। 15(?)।
- फेल्डर, आर. , और ब्रेंट, आर. (2005)। छात्र मतभेदों को समझना। जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एजुकेशन, 94(1), 57-72। https://doi. org/10. 1002/j. 2168-9830. 2005. tb00829. x
- गार्डनर, एच. (1983)। मन के ढाँचे: बहुविध बुद्धिमत्ता का सिद्धांत। न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स।
- गार्डनर, एच. (1993)। बहुविध बुद्धिमत्ता: व्यवहार में सिद्धांत। न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स।
- गार्डनर, एच. (1999)। बुद्धिमत्ता का पुनर्संरचना: 21वीं सदी के लिए बहुविध बुद्धिमत्ता। न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स।
- गार्डनर, एच. (2000)। बुद्धिमत्ता का पुनर्संरचना: 21वीं सदी के लिए बहुविध बुद्धिमत्ता। न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स।
- गार्डनर, एच. (2006)। मन का विकास और शिक्षा। न्यूयॉर्क: रूटलेज।
- गौव्स, एफ. ई. (2007)। परिणाम-आधारित शिक्षा कक्षा में बहुविध बुद्धिमत्ता के माध्यम से शिक्षण और सीखना। अफ्रीका शिक्षा समीक्षा, 4(2), 60-74. https://doi. org/10. 1080/18146620701652705
- ग्रे, पी. (2007). मनोविज्ञान (5वां संस्करण). न्यूयॉर्क: वर्थ पब्लिशर्स.
- ग्रीन, ए. एल. , हिल, ए. वाई. , फ्राइडे, ई. , और फ्राइडे, एस. एस. (2005). टीम उत्पादकता बढ़ाने के लिए बहु-बुद्धि का उपयोग. प्रबंधन निर्णय, 43(3), 349-359. https://doi. org/10. 1108/00251740510589742
- होएर, टी. (2002). स्कूलों में बहु-बुद्धि का अनुप्रयोग. 5 अक्टूबर, 2005 को http://www. newhorizons. org/strategies/mi/hoerr2. htm से प्राप्त किया गया
- हर्ड, पी. डी. एच. (1970). विज्ञान के युग के लिए वैज्ञानिक ज्ञान। द साइंस टीचर, 37(1), 13-15।
- जेना, आर. के. (2018)। लर्निंग एनालिटिक्स का उपयोग करके छात्रों की सीखने की शैली का पूर्वानुमान लगाना: भारत के व्यवसाय प्रबंधन छात्रों का एक केस स्टडी। व्यवहार और सूचना प्रौद्योगिकी, 37(10-11), 978-992।
- कगन, एल. (2000)। बहुविध बुद्धि: संरचना और गतिविधियाँ। सैन क्लेमेंटे, सीए: कगन पब्लिशिंग।
- रोमन याविच, और रोट्टिनट्स्की, आई. (2020)। बहुविध बुद्धि और स्कूली पढ़ाई में सफलता।
- वाडिवुकरसी, पी. एम. , और ज्ञानदेवन, आर. (2022)। उच्चतर माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर बहुविध बुद्धि का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेल्थ साइंसेज, 6(एस5), 72717276। https://doi. org/10. 53730/ijhs. v6nS5. 10332

Citation: कुमारी. प्र. & चक्रवर्ती. श., (2026) "उच्च विद्यालयों के छात्रों के लिए एक विषय के रूप में हिंदी शिक्षा में बहु-बुद्धि सिद्धांतकीभूमिका और शैक्षणिक सफलता पर इसका प्रभाव", *Bharati International Journal of Multidisciplinary Research & Development (BIJMRD)*, Vol-4, Issue-07, July-2026.